1953C Four Vignettes

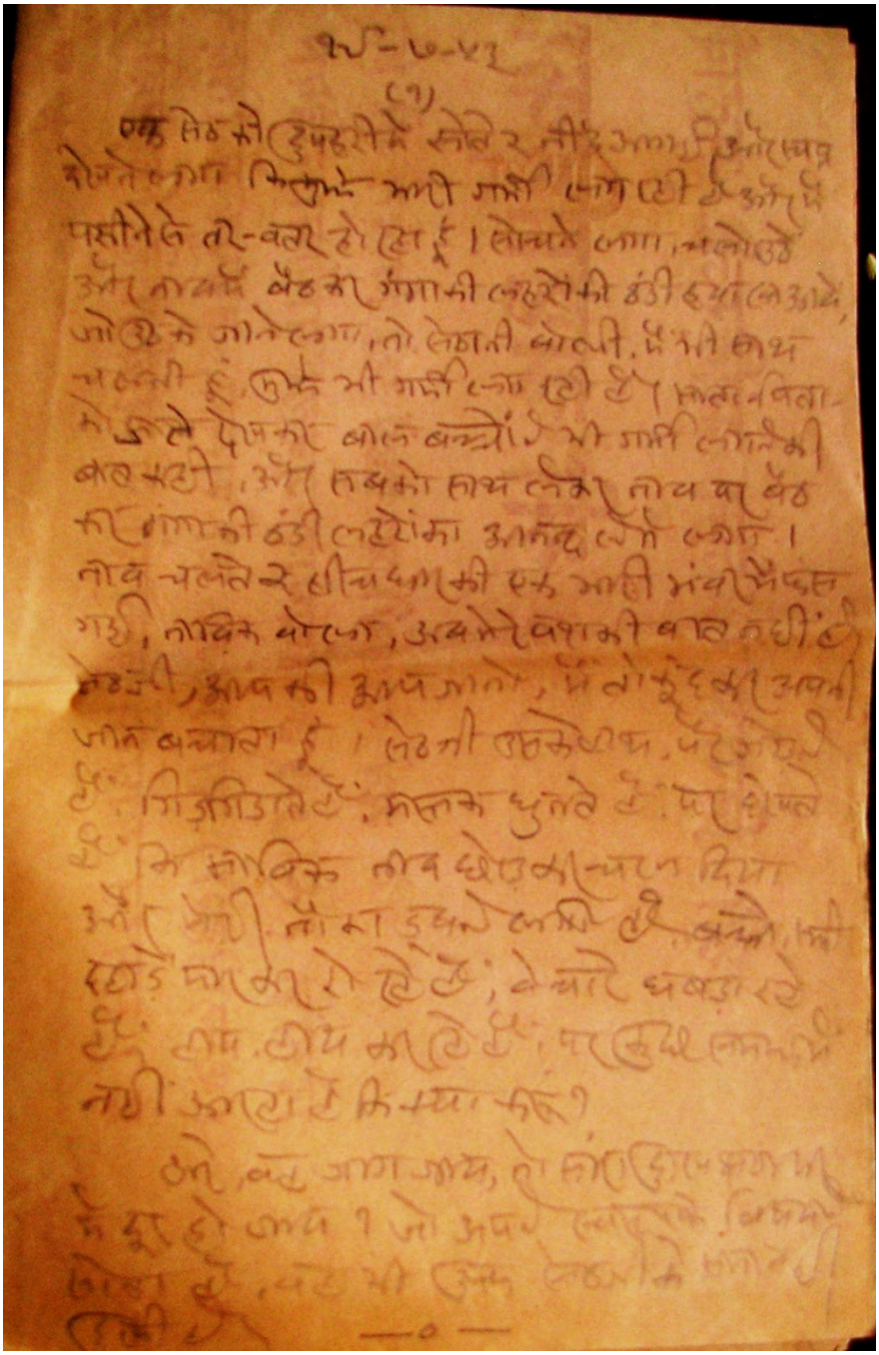

राजा जनक के पास आकर किसी ने पूछा कि महाराज
मुझे बताइये कि मुझ जैसे आदमी से मोह कैसे छूटे
वे मुझे छोड़ते ही नहीं हैं; फिर देखते-देखते
जनक ने उसे कोई उत्तर न देकर उठे और दीवार के
एक खंभे को दोनों हाथ फैलाकर चिपटाये और
जोर जोर से चिल्ला दिया। तथा चिल्लाकर बोले,
अरे कोई मुझे छुड़ाओ। वह आगन्तुक बोला
महाराज, आप बड़े मूर्ख मालूम पड़ते हैं। आप
स्वयं तो खंभे को पकड़े हैं और चिल्लाते
हैं कि खंभे ने पकड़ लिया। जनक बोले,
~~[illegible]~~ भैया, यदि खंभे ने मुझे नहीं पकड़ा
है, तो तुम्हें कुटुम्बियों ने भी नहीं पकड़ा
बताओ, वे तुम्हें कहाँ लिपटे हुए हैं,
अपने मोह के कारण तुम्हीं लिपटे रहते हो
यदि मोह त्याग तक भी तुमसे मोह छोड़
दो तो तुम भी निर्मोही समझे जाओ।

हम सभी भैया, स्वयं कुटुम्बियों के
मोह माया के बंधन में हो और कहते हैं
कि कुटुम्बीजन हमें बांधे हुए हैं

— o —

एक सेठने एक कोठी, मकान बनवाया और (उसका) उद्घाटन-समारोह किया। समारोहमें आये लोगों से पूछने लगा कि बताओ इसमें क्या कमी रह गई है? यदि कोई कमी रह गई हो तो मैं फिर इंजीनियरोंसे इन कमियोंको ठीक करा दूं। एक बोला, सेठजी इस मकानमें दो बड़ी कमियां रह गई हैं। सेठजी बोले, बताओ, मैं अभी ठीक करा देता हूं। वह बोला, एक तो यह कमी है कि यह मकान सदा स्थायी रहने वाला नहीं है, एक न एक दिन गिर जायेगा, और दूसरी यह कमी है कि इसका बनवाने वाला भी इसमें सदा रह नहीं सकता, वह भी एक दिन संसार छोड़ चला जायगा। ये दोनों कमियां ही ठीक करा सकते हो तो कराओ। सेठजी उसका मुंह ताकते रह गये और दिल मसोसकर रह गये।

इस दुनियांके सब काम ऐसे ही हैं, इस माने में कि न इन स्थायी हैं और न उनसे काम ...